Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मिस्र सभ्यता एवं भारतीय सभ्यता अंतर्संबंध एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. मंजूला निंगवाल*

* विभागाध्यक्ष (इतिहास) भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मिस्र सभ्यता 3100 ई.पू. से नील घाटी में और भारतीय उपमहाद्वीप की हड़प्पा। सिन्धु सभ्यता 2600–1900 ई.पू. से समकालीन रूप में विकसित हुई। दोनों प्राचीन विश्व की नगरीय, लेखन युक्त एवं जटिल धार्मिक संरचना वाली सभ्यताएँ थीं। 19 वीं शताब्दी से विद्धानों के बीच यह प्रश्न रहा है कि क्या दोनों के बीच केवल समकालीनता थी अथवा प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष अंतर्संबन्ध भी थे। नील नदी की घाटी में विकसित मिस्र सभ्यता और सिन्धु सरस्वती, नदी तंत्र पर पल्लवित भारतीय सभ्यता, विश्व की दो प्राचीनतम नगरीय एवं लेखन युक्त संस्कृतियाँ है। दोनों ने 3000 ई.पू. के आसपास राज्य, वास्तु, विज्ञान एवं धर्म के क्षेत्र में ऐसी उपलब्धियाँ दी जो सहस्राब्दियों तक मानवता को प्रभावित करती रही। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य मिस्र एवं भारतीय सभ्यता के अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन करना है।

शब्द कुंजी – सभ्यता, नील घाटी, उपमहाद्वीप, समकालीन संस्कृति, विज्ञान।

प्रस्तावना – 19वीं शताब्दी के औपनिवेशिक पुरातत्व से लेकर 21 वीं शताब्दी के समुद्री पुरातत्व तक यह बहस चलती रही है कि प्राचीन विश्व विलग सभ्यताओं का द्वीप समूह था या परस्पर जुड़ा हुआ नेटवर्क। मिस्र के गीजा के पिरामिड और भारत के लोथल का बन्दरगाह, मिस्र का हाइरोग्लिफ और भारत की सिंधु लिपि, मिस्र का ममीकरण और भारत का शवदाह – ये सब एक ओर दोनों सभ्यताओं की मौलिक विशिष्टता दर्शाते है, तो दूसरी ओर एक साझा प्रश्न खड़ा करते है, क्या इतनी दूर स्थित दो महान सभ्यताएँ पूर्णत: पृथक रही ?

मिस्र सभ्यता एवं भारतीय सभ्यता अर्न्तसम्बन्ध – मिस्र की सभ्यता अति प्राचीन मानी जाती है। इस सभ्यता का आरम्भ किस प्रकार प्रकार भारत से गए आर्यो ने कियाय इसे इस प्रकार जान सकते हैं। यूनान में हेरोडोटस नामक इतिहासकार ईसा से पांचवी शताब्दी पूर्व हुआ था। वह कहता है कि लगभग सब देवों के नाम देश में मिस्र देश से आए थे। हेरोडोट्स बताते है कि 12 देवों से 8 देव प्रकट हुए इन 12 में हरकुलेश एक है, जो कि सब देवों में छोटे हैं, वह दूसरी श्रेणी के देव है तथा बेक्सस देवों की तीसरी श्रेणी में से है। बेक्सस का काल भी अमेसिस राजा के राज्य से 15000 वर्ष पूर्व का समय था।

भारतीय इतिहास में भी मरीचि के पुत्र कश्यप व अदिति से 12 पुत्र उत्पन्न हुए थे।

धाताऽर्यमा च मित्रश्च वरूणोंऽशो अगस्तथा।
इन्द्रो विवस्वान्पूषा च पर्जन्यों दशमरू स्मृत:।।
ततस्त्वष्टा ततो विष्णुरजधन्योऽजघन्यज:।
इत्येते द्वादषाऽऽदित्या: कश्यपस्य सुता: स्मृता।।

जिनके नाम है धाता, अर्यमा, मित्र, वरूण, अंश, भग, विवस्वान, इन्द्रपूषा, पर्जन्य, त्वष्टा और विष्णु। यद्यपि विष्णु सबसे छोटे थे, तो भी वही उन सब के नेता रहे। बारह देवों का कुल सुरकुल था। देवों का राजा होने के कारण विष्णु सुरकुलेश थे। सुर का स वर्ण ह में विकृत हुआ और विष्णु का नाम हरकुलेश बन गया। इसी को यूनानी विहान हरकुलेश कह रहे थे।

बेक्सस का अर्थ है कश्यप दिति से उत्पन्न सौ पुत्रों में से विप्रचिति मदाबली और प्रधान था। कश्यप ने उसे दानवों का राजा बनाया था पर वह विष्णु आदि से भी छोटा था। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि भारतीय प्राचीन इतिहास को ही प्रकाशन्तर से मिस्र यूनान आदि क्षेत्रों के लोग मानते आए हैं, क्योंकि भारतीय आर्य ही उन क्षेत्रों में सर्वप्रथम गए थे।

मिस्र देश भारतीयों ने ही बसाया इसके और भी निम्न अकाट्य प्रमाण है। मिस्र देश के वासी अपने को सूर्यवंशी कहते है, सूर्य की पूजा करते है और मनु को मेनस के नाम से अपना प्रथम राजा मानते हैं जो कि सूर्य के पुत्र है और उनका नाम मनु वैवस्वत है।

अल्काट महोदय व्यक्त करते हैं कि अब से 8000 वर्ष पूर्व भारतीयों ने जाकर एक कॉलोनी बसाई जिसे मिस्र कहते हैं। भारतीय अपने साथ अपनी कला व उच्च सभ्यता ले गए। मिस्र की प्राचीन सभ्यता प्राचीन भारत की ही देन है।

मिस्र देश के पास नील नदी बहती है, वह भी संस्कृत का ही शब्द है, जो भारत से गए आर्यो ने ही रखा। मिस्र देश के राजाओं का नाम रोमेसिस अर्थात् राम इस्स प्रथम द्वितीय रखे जाते रहे हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वो लोग श्री राम को ही राजा मानते थे।

मिस्र देश की दार्शनिक मान्यताएँ जैसे कि प्रलयकाल, उत्पत्तिकाल, मातृशक्ति, सत्य आदि विचार भारतीयों के समान ही पाए जाते थे। यज्ञाग्नि को अति पवित्र मानते थे तथा एकेश्वर व बहुदेवतावाद, भारतीयों के समान मानते थे।

फ्रेंच लेखक लुई जाकोल्यों अपने ग्रन्थ 'भारत में बाइबिल' 1868 में

लिखते हैं – जिन लोगों ने मिस्र की सभ्यता को अपने अन्वेषण का विषय बनाया तथा वहाँ के मन्दिरों और मकबरों का परीक्षण किया उन्होंने हमें बताया और विश्वास दिलाया कि यह देश ही हमारी यूरोपीय सभ्यता का उत्पत्ति स्थल है। कुछ विद्वान ऐसे भी हैं, जो यह दावा करते हैं कि मिस्र से ही भारत ने वर्ण व्यवस्था का विधान, भाषा तथा विधि नियमों को ग्रहण किया है। किन्तु सच्चाई यह है कि खुद मिस्र ही समग्रता से भारत की अनुकृति है।

मिस्र के लोग आत्मा की अमरता, धर्म की सत्ता सर्वोपरि और पाप पुण्य कर्मों की मान्यताओं को भारतीयों के समान ही मानते थे।

वर्ण व्यवस्था, पारिवारिक जीवन स्त्रियों की दशा भारतीयों के समान थी। विद्धानों का मत है कि मिस्र के प्राचीनतम मन्दिरों की रचना भारत के मन्दिरों से बहुत मिलती है। मन्दिरों के पुराने चिट्ठों में यह भी लिखा है कि मिस्र का धर्म भारत से ही आया।

मिस्र में कई तरह के लोग निवास करते थे। हिस्टोरिकल हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड में लिखा है कि इजिप्ट निवासी पणीको की शाखा है। यह लोग पर्शियन गल्फ होते हुए लाल समुद्र के दक्षिण में पान्त नामक देश से आए। हमारा विश्वास है कि यह पान्त देश पाण्डव के सिवा और कुछ नहीं है, जो कि दक्षिण भारत में उस समय का प्राचीन राज्य रहा है।

अमेरिकन रिवीजन कमेटी ने बाइबल डिक्शनरी के पेज संख्या 38 पर एक चित्र पुन: मुद्रित किया है, जिसमें 19 वीं डायनेस्टी के उत्तारी इजिप्ट के राजा का चित्र है, जो कि एक राज ऋषि के रूप में वैष्णव संप्रदाय के चिन्ह धारण कर रहा है। वैष्णव सम्प्रदाय के चिन्ह उसके सिर व हाथों पर परिलक्षित हो रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि मिस्त्र में उस काल में भारतीय वैष्णव सम्प्रदाय पूर्ण रूप से विकसित था।

मिस्टर रिटेन (1784) कहते हैं कि मिस्री, भारतवासी, यूनानी, इटली वाले वास्तव में किसी एक ही केन्द्र से बिखरे होंगे और यही लोग अपना धर्म, आचार और विज्ञान, चीन और जापान में ले गए होंगे। क्या हम यह नहीं कह सकते कि मैक्सिको और पीरू में भी यही लोग अपनी शिक्षा ले गए। मैं अनुमान करता हूं कि मिस्री पुरोहित नील से गंगा और यमुना को आते होंगे और यह निश्चय है कि वे वहाँ के ब्राम्हणों से ठीक उसी प्रकार मिलने के लिए आते होंगे जिस प्रकार यूनान के विद्धान उनसे मिलने को जाया करते थे अर्थात् विद्या ग्रहण करने के लिए।

प्राचीन मिस्र में भारत के समान ही समाज का विभाजन था। उच्च वर्ग में राजा, सामन्त, पुरोहित, दरबारी व उच्च पदाधिकारी आते थे।

राजा व सामन्त गण राज्य व्यवस्था देखते थे व उनका रहन–सहन व जीवन उच्च स्तर का था। पुरोहित वर्ग धर्म व्यवस्था, समाज को ज्ञान व मंदिरों पर नियन्त्रण कार्य देखते थे। मध्यम वर्ग में व्यापारी, कृषक, शिल्प व लिपिक आदि आते थे। निम्न वर्ग में मजदूर आते थे। समाज में स्त्रियों की दशा तथा उनका स्तर ऊँचा था, शासन व्यवस्था में उनकी भागीदारी रहती थी। स्त्री अपना पति चुनने के लिए स्वतंत्र थी। विवाह के समय पति प्रतिज्ञा करता था कि वह जीवन भर पत्नी का साथ निभाएगा। पूर्ण सामाजिक व्यवस्था भारतीयों के समान थी।

अगर इन तर्कों को हम स्वीकार कर ले स्पष्ट होता है कि भारतीय सभ्यता मिस्र सभ्यता से धार्मिक रूप से अंतर्संबंधित थी।

इसके अतिरिक्त इतिहासकारों के शोधों को देखें जिसमें 1990 के बाद लाल सागर तट पर बेरेनिके के उत्खनन से भारतीय काली मिर्च, वस्त्र एवं मोतियों की प्राप्ति से इस बहस को नया मोड़ दिया। पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी जैसे ग्रीक रोमन ग्रंथों में भारत के बंदरगाहों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इससे स्पष्ट है कि कम से कम रोमन काल तक भारत और मिस्र के बीच नियमित समुद्री संपर्क था।

निष्कर्ष –यह शोध अध्ययन दो अतिवादी मतों के बीच मध्यमार्ग प्रस्तुत करता है न तो मिस्र को भारत से काटता है न ही भारत को मिस्र में विलीन करता है। यह जुड़े हुए प्राचीन विश्व की अवधारणा को मिस्र–भारत संदर्भ में प्रमाणित करता है। इससे हमें यह समझ मिलती है कि वैश्वीकरण 21 वीं सदी की उपज नहीं है, उसकी जड़ें 200 साल पुरानी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. रोमिला थापर – Early India : From the origin to Ad 1300-2002
2. ए एल बाशम – The wonder that was India & 1954
3. बी.बी. लाल – The Saraswati Flows on 2002
4. डी.डी. कौशाम्बी – An introduction to the study of indin history 1956
5. एस. राधाकृष्णन – Indian philosophy vol. 1 1993
6. वायु पुराण पृ. 66–67
7. पण्डित भगवत, भारत का वृहद इतिहास, 1951, पृ. 219–20
8. पण्डित रघुनंदन शर्मा, वैदिक सम्पत्ति 1931, पृ. 270

****